Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–352

B.A. (Part–III) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - II

(निबन्ध एवं भाषा)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) ललित निबन्ध किसे कहते हैं ?

   (ii) देवनागरी लिपि की कोई **चार** विशेषताएँ लिखिए।

(iii) भारतीय आर्य भाषाओं का अभिप्राय समझाइए।

(iv) विद्यानिवास मिश्र के निबंध कला की विशिष्टता पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(v) आलोचना और निबन्ध में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(vi) बाबू गुलाब राय के अनुसार साहित्य का मूल्य क्या है ?

(vii) 'दाँत' निबन्ध का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(viii) नन्दकिशोर आचार्य के निबन्ध 'परम्परा बोध और समकालीन साहित्य' में निहित विचार को स्पष्ट कीजिए।

(ix) 'साहित्य का मूल्य' नामक निबन्ध की विषय-वस्तु क्या है ?

(x) महादेवी वर्मा के अनुसार 'जीने की कला' को संक्षेप में समझाइए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित सात में से किन्हीं **पाँच** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2. तत किम्! मैं हैरान होकर सोचता हूँ कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाखून न काटने के लिए डाँटता है। किसी दिन-कुछ थोड़े लाख वर्ष-वह अपने बच्चों को नाखून नष्ट करने पर डाँटता रहा होगा। लेकिन प्रकृति है कि वह अब भी नाखून को जिलाए जा रही है और मनुष्य है कि वह अब भी उसे काटे जा रहा है। वे कंबख्त रोज बढ़ते हैं, क्योंकि वे अंधे हैं, नहीं जानते कि मनुष्य को इससे कोटि-कोटि गुना शक्तिशाली अस्त्र मिल चुका है। मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाए, यह उसे असह्य है।

3. मन:प्रसाद अर्थात् मन की स्वच्छता, सौम्यता या सौमनस्य जो बहुधा तभी होगा जब बाहरी विषयों की चिंता में मन व्यग्र और व्याकुल न हो। बाहर से विनीत और सौम्य बनना कुछ और ही बात है मन का सौम्य कुछ और ही है। जिसकी बड़ी पहचान एक यह भी है कि किसी का अनिष्ट न चाहेगा वरन् सबों के हित की इच्छा रखेगा। तीसरा गुण मन का श्रीकृष्ण भगवान ने मौन कहा है। मौन अर्थात् मुनि भाव। एकाग्रतापूर्वक अपने को सोचना कि हम कौन हैं, जिसका दूसरा नाम निदिध्यासन भी है। वाक्-संयम न बोलना या कम बोलना भी मन के संयम का हेतु है।

4. प्रसाद की काव्य-भाषा समरूप और समरस है। उनमें निराला की भाँति प्रयोगों का बाहुल्य नहीं। जहाँ कहीं प्रसाद को उदात्त भावना की व्यंजना करनी पड़ी है, वहाँ उन्होंने भाषा के बदले छन्द-योजना की सहायता ली है और वीर रस के वर्णन में तो वे प्राय: नि:सहाय हो गए हैं। 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' जैसी कविता में वीर भाव की अपेक्षा विगर्हणा की मनोभावना प्रमुख रूप से निर्मित हुई है। हास्य, रौद्र और भयानक रसों की अपेक्षा प्रसाद की काव्य-भाषा वियोग, शृंगार और करुण रस के अधिक उपयुक्त बन सकी है। प्रसाद की भाषा में लाक्षणिक प्रयोगों के बाहुल्य की चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं। वक्रोक्ति बहुल लाक्षणिक पदावली की योजना से प्रसाद की भाषा एक अभिनव भंगिमा से समन्वित होती है।

5. दांत दंतावली में बने हैं तभी तक उनका महत्व है। उसके बाहर के घृणित और फेंके जाने योग्य हैं। ठीक वही स्थिति मनुष्य की भी है इसलिए अपनी जाति और देश में ही रहे। जिस प्रकार दाँत में दर्द होने पर उसे निकलवा दिया जाता है, वैसे ही स्वार्थी और जाति का अहित करने वालों से भी कोई सम्बन्ध नहीं है।

6. साधारणतया हम उसी वस्तु को मूल्यवान कहते हैं जो या तो सीधे तौर से हमारे उपयोग में आ सके या हमारे लिए उपयोगी वस्तुओं को जुटा सके या भविष्य में जुटा सकने की सामर्थ्य रखे। हम उपयोगी उसी वस्तु को कहते हैं जो हमारी किसी आवश्यकता की पूर्ति कर सके। कूड़ा-कर्कट जब हमारी किसी आवश्यकता की पूर्ति नहीं करता तो अनुपयोगी समझा जाकर फेंक दिया जाता है किन्तु वही जब खाद बनकर हमारे उद्यान के फूलों या गोभी-टमाटर के उत्पादन तथा उनकी उपज और आकार वृद्धि में सहायक होता है तब हमारी एक आवश्यकता की पूर्ति के कारण उपयोगी और मूल्यवान बन जाता है।

7. सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों का चिर, निवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो-चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह-ऊह करेगा जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया इत्यादि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा।

8. पर यदि उनसे बात आगे बढ़ाई जाए तो घुमा-फिराकर यही जवाब मिलेगा—'मूल्यहीनता ही आधुनिकता का मूल्य है।' पर यह भी कोई बात हुई। अतः शाब्दिक द्रविड़ प्राणायाम को छोड़कर हमें मान लेना चाहिए कि आधुनिकता मूल्य या तथ्य नहीं, स्वभाव या संस्कार-प्रवाह है। हाँ, इतना माना जा सकता है कि इसके जनक कुछ मूल्य हो या इसके द्वारा या इसके माध्यम से कुछ मूल्यों का जन्म हो, जैसे उन्नीसवीं शती की 'पुरानी आधुनिकता' के विषय में परन्तु स्वतः यह संस्कार-प्रवाह है, मूल्य नहीं।

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

9. 'राजस्थान का हिन्दी साहित्य' विषय पर एक लेख लिखिए।

10. निबन्धकार के रूप में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के साहित्यिक योगदान का वर्णन कीजिए।

11. विद्यानिवास मिश्र कृत 'तमाल के झरोखे से' निबन्ध की संवेदना और शिल्प का विवेचन कीजिए।

12. ''बिना मूल्य व्यवस्था और संस्कार के आधुनिकता की कल्पना नहीं की जा सकती।'' इस कथन की समीक्षा 'आधुनिकता नयी और पुरानी' निबन्ध के आधार पर कीजिए।